The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 5 | May 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की अपने शिक्षाक्रम के प्रति जागरुकता तथा शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

स्वाति जोशी
शोध छात्रा, एम.बी.पी जी. कॉलेज, हलद्वानी, कुमाऊं विश्वविद्यालय, (नैनीताल)
रेखा देव
एच. ओ. डी, एच. एन. बी.पी. जी. कॉलेज, खटीमा, कुमाऊं विश्वविद्यालय, (नैनीताल)

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है ये कथन पूर्णतया यथार्थ है। शैक्षिक व राष्ट्रीय उद्देश्यों को मूर्त रूप देने का चुनौतीपूर्ण कार्य शिक्षक ही करता है। राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में शिक्षक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देता है। प्रत्यक्षतः अपने द्वारा पढ़ाए गए पाठ्यक्रम से तथा अप्रत्यक्षत: अपने व्यवहार, अभिवृत्ति, मूल्य, सम्बन्ध, छात्रों में रुचि आदि के रूप में। इस प्रकार एक शिक्षक अपने कार्य तथा व्यवहार से देश के भावी कर्णधारों का निर्माण करता है। यह आवश्यक है कि शिक्षक योग्य, कुशल तथा शिक्षण में रुचि रखने वाला हो तभी वह देश को सही दिशा में उन्नति हेतु अग्रसर कर सकता है। अतः एक योग्य शिक्षक निर्माण हेतु उसे प्रशिक्षण देने की आवश्यकता अनुभव की जाती है। अमेरिकी शिक्षाक्षास्त्री किलपैट्रिक ने कहा कि शिक्षक-प्रशिक्षण में शारीरिक, मानसिक दोनों क्रियाएँ सम्मिलित हैं अतः एक प्रशिक्षित शिक्षक अपने व्यवसाय में अधिक योग्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत एक अप्रशिक्षित शिक्षक के लिए यह एक जोखिम भरा कार्य है और जब वह अपने कार्य में असफल होता है तो उसमें नकारात्मक अभिवृत्ति का उदय होता है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भावी शिक्षकों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं जागरुकता को विकसित करके उनके व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन लाना है जिससे वह राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में सफल हो सकें।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के गिरते हुए स्तर को उठाने हेतु प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा के स्तर में सुधार की आवश्यकता है, तभी उच्च शिक्षा का स्तर सुदृढ़ हो सकेगा। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा का सम्प्रत्यय प्रस्तुत किया था और बेसिक प्रशिक्षण कॉलेज अस्तित्व में आए। उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम इलाहाबाद में प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों हेतु बेसिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया।

सन् 1986 से पूर्व भारत में प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु राजकीय तथा वित्तपोषित संस्थाएँ ही कार्य कर रहीं थी परन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया कि प्राथमिक प्रशिक्षण को स्ववित्तपोषित बनाया जाये। परिणामस्वरुप वर्तमान में भारत में शिक्षक प्रशिक्षण हेतु राजकीय, वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। उत्तर प्रदेश में स्ववित्तपोषित संस्थानों को प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण की जिम्मेदारी कुछ समय पूर्व प्रदान की गई है। अतः प्रश्न उठता है कि क्या राजकीय और स्ववित्तपोषित प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएँ छात्रों को जागरुक करने और उनमें स्वस्थ शिक्षण अभिवृत्ति निर्माण में सुदृढ भूमिका अदा कर रही हैं?

हम प्रतिदिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि शिक्षक द्वारा छात्र को प्रताड़ित किया गया, सरकारी संस्थानों में शिक्षक स्वयं शिक्षण करने के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को कुछ मूल्य देकर संस्थान में शिक्षण हेतु भेज देते हैं इस प्रकार की घटनाओं के अध्ययन से शोधार्थी को अनुभव हुआ कि शिक्षकों में स्वस्थ शिक्षण अभिवृत्ति का स्थान व्यावसायिक अभिवृत्ति ने ले लिया है और अधिकांशतः छात्र केवल व्यवसाय प्राप्ति की इच्छा से शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही अनेक बार सत्रोपरान्त भी उन्हें अपने शिक्षाक्रम का सम्पूर्ण ज्ञान तथा शिक्षाक्रम के विभिन्न कार्यक्रमों के उद्देश्य एवं महत्व का ज्ञान भी नहीं हो पाता है।

डॉ. सैयदन ने कहा था जब तक लोगों में अध्यापक बनने की इच्छा तथा जागरुकता थी, प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या माँग से अधिक नहीं थी तब तक स्थिति उतनी उग्र नहीं थी जितनी कि आज है। अतः उन्होंने दिल्ली के सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन में छात्रों के चयन हेतु शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षा को रखने का सुझाव दिया। परन्तु उत्तर प्रदेश में बी. टी. सी. छात्रों का चयन प्रतिशत (मैरिट) के आधार पर किया गया है । अतः शोधार्थी को अपना यह प्रयास सार्थक एवं औचित्यपूर्ण लगा ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का लिंग तथा संस्था के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की अपने शिक्षाक्रम के प्रति जागरुकता का लिंग तथा संस्था के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति तथा अपने शिक्षाक्रम के प्रति जागरुकता में लिंग तथा संस्था के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन हेतु न्यादर्श

अध्ययन की प्रकृति एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुए आगरा - जिले के राजकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (DIET) तथा स्ववित्तपोषित प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 120 प्रशिक्षणार्थियों 60 महिला एवं 60 पुरुष को सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

सारिणी सं. 1 अध्ययन न्यादर्श

क्र.सं.	**प्रशिक्षण संस्थान**	**प्रशिक्षणार्थी**	
		महिला	पुरुष
1.	राजकीय संस्थान	30	30
2.	स्ववित्तपोषित संस्थान	30	30
	कुल प्रशिक्षणार्थी	60	60

अध्ययन विधि एवं उपकरण

अध्ययनार्थ वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों की शिक्षक अभिवृत्ति तथा शिक्षाक्रम जागरुकता जानने हेतु क्रमशः डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी तथा स्वनिर्मित शिक्षाक्रम जागरुकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ

शोध समस्या के परिप्रेक्ष्य में संकलित किए गए प्रदत्तों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी मान के विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त शोध उपलब्धियों को निम्नांकित क्रम में प्रस्तुत किया गया है-

1. **प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का लिंग तथा संस्था के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।**

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श की शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से संस्थाओं व लिंग के क्रम में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी अनुपात निकाला गया जिन्हें तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है।

सारिणी सं. 2 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी मान

क्र.	संस्थान		न्यादर्श	मध्यमान		प्रमाप विचलन		टी	
1.	राजकीय	महिला	30	232.5	228.75	36.96	36.96	0.84	0.53
		पुरुष	30	224.5		37.59			
2.	स्ववित्तपोषित	महिला	30	220	226.50	27.38	30.42	1.85	
		पुरुष	30	234		30.94			

तालिका सं. 2. आधार पर राजकीय संस्थाओं की महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पुरुषों से मध्यमान के आधार पर उच्च प्राप्त की गई। परन्तु टी का मान 0.84 ज्ञात किया गया। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पुरुष प्रशिक्षणार्थियों से मध्यमान की दृष्टि से निम्न है तथा टी मान 1.85 है। राजकीय तथा स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्ययनरत महिला, पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है व टी का मान 0.53 ज्ञात किया गया। अर्थात कहा जा सकता है कि विभिन्न समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, परन्तु मध्यमान के आधार पर स्ववित्तपोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति राजकीय के प्रशिक्षणार्थियों से कम थी।

2. प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की अपने शिक्षाक्रम के प्रति जागरूकता का लिंग तथा संस्था के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता के अध्ययन के लिए अनुसंधायक द्वारा स्वनिर्मित शिक्षाक्रम जागरुकता मापनी को प्रशिक्षणार्थियों पर प्रशासित कर परीक्षण प्राप्तांकों के आधार पर निम्न आंकड़े प्राप्त किए गए-

सारिणी सं. 3 प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की अपने शिक्षाक्रम के प्रति जागरुकता का मध्यमान,प्रमाप विचलन व टी मान

क्र.	**संस्थान**		**न्यादर्श**	**मध्यमान**		**प्रमाप विचलन**		**टी**	
1.	**राजकीय**	महिला	30	29.03	28.83	4.40	4.98	2.81	0.53
		पुरुष	30	25.63		4.95			
2.	**स्ववित्तपोषित**	महिला	30	28.83	26.83	4.93	4.5	2.12	
		पुरुष	30	26.37		4			

तालिका सं. 3 के आधार पर कहा जा सकता है कि राजकीय संस्थाओं में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता पुरुषों से मध्यमान के आधार पर उच्च है। टी का मान 2.81 ज्ञात किया गया। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता से मध्यमान की दृष्टि से उच्च है। टी मान 2.12 प्राप्त किया अर्थात महिलाएँ जागरुक अधिक हैं। राजकीय संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता मध्यमान के आधार पर स्ववित्तपोषित के प्रशिक्षणार्थियों से मध्यमान की दृष्टि से उच्च प्राप्त हुई। टी का मान 2.87 था अत: कह सकते हैं कि राजकीय संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थी स्ववित्तपोषित की अपेक्षा अधिक जागरुक हैं।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

परीक्षण से प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं-

1. प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति सामान्य व सकारात्मक थी। अर्थात शिक्षण में सामान्य रुचि रखने वाले प्रशिक्षणार्थी ही अधिकांशतः शिक्षण व्यवसाय की ओर आकृष्ट होते हैं। परिणामस्वरुप वे समाज व राष्ट्रीय परिवर्तन की ओर विशेष रूप से प्रयासरत नहीं होते हैं।

2. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में लिंग एवं संस्था के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। इन निष्कर्षो के कारण रुप में कहा जा सकता है कि व्यक्ति की शिक्षण अभिवृत्ति लिंग तथा संस्था द्वारा विशेष प्रभावित नहीं होती है।

3. शिक्षाक्रम जागरुकता के दृष्टिकोण से राजकीय तथा स्ववित्तपोषित प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य स्तर पाया गया। अर्थात प्रशिक्षणार्थी अपने शिक्षाक्रम के प्रति विशेष जागरुकता या सजगता नहीं रखते हैं।

4. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता में संस्था के परिप्रेक्ष्य में अन्तर पाया गया। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी. डी. एल. एड. पाठ्यक्रम का यह प्रारम्भिक वर्ष होना इस निष्कर्ष का सम्भावित कारण हो सकता है।

5. लिंग क्रम में प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षाक्रम जागरुकता में अन्तर पाया गया। सम्भवतः महिलाएँ अपने अध्ययन तथा उपलब्धियों के प्रति पुरुषों की अपेक्षा अधिक चेतन्य होती है।

3. शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

शोध अध्ययन की सार्थकता उसकी व्यावहारिक उपादेयता पर आश्रित होती है इसके अभाव में अनुसंधान पूर्णत: महत्वहीन प्रतीत होता है। यद्यपि न्यादर्श का आकार बहुत छोटा था परन्तु इससे प्राप्त संकेतों के आधार वर्तमान शोध की शैक्षिक उपादेयता को अग्रांकित रुप में वर्णित किया गया है।

1.शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षणार्थियों का चयन शिक्षण अभिवृत्ति से युक्त करें। इसके लिए प्रशिक्षणार्थियों का चयन न केवल ज्ञान अपितु शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण के आधार पर किया जाना चाहिए तथा ऐसे शिक्षाक्रम का विकास करना चाहिए कि प्रशिक्षणार्थियों को सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति से युक्त बनाया जा सके।

2. शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति को जानकर उसे सकारात्मक बनाने हेतु प्रयास करें जिससे भावी जीवन में उनका कार्य सरल हो सके साथ ही उन्हें अपने शिक्षाक्रम के उद्देश्यों तथा महत्व का समय समय पर स्मरण कराते रहना चाहिए।

3. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण के प्रति अपनी अभिवृत्ति को सकारात्मक व उच्च बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपने शिक्षाक्रम से पूर्ण रूप से अवगत होना चाहिए, उसके उद्देश्य, महत्व, आवश्यकता के प्रति जागरुक रहना चाहिए।

4. राजकीय संस्थानों को मॉडल स्कूल की तरह कार्य करना चाहिए अर्थात स्ववित्तपोषित संस्थानों के प्रारम्भिक वर्ष में उन्हें पर्याप्त निर्देशन देना चाहिए तथा समय समय पर शिक्षकों को स्ववित्तपोषित संस्थानों में जाकर प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहलूवालिया एस. पी. (2003), टीचर एटिट्यूड इन्वेन्टरी नेशनल साइकॉलॉजिकल कॉरपोरेशन कचहरी घाट आगरा।

2. कॉल, लोकेश (2010), मैथडलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. किलपैट्रिक, डब्ल्यू. एच. (1954.), शिक्षा में शिक्षक की भूमिका, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, न्यूयॉर्क।

4.कुमार, अत्री, डॉ. अजय (2010), हिमाचल प्रदेश के भावी शिक्षकों में पर्यावरण जागरुकता,

http:/www.oppapers.com/cssays/environmentawareness.amongpraspoctiveteachers/287879

5. गुप्ता, एस. पी. (2010), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा भवन, इलाहाबाद (उ. प्र.)।

6. गुप्ता, संगीता एवं मोहन्ती, डॉ. ए. के. (2009), भावी शिक्षा शिक्षण व्यवसाय, कक्षाकक्ष शिक्षण तथा छात्र केन्द्रित अभ्यान प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, जरनल ऑफ टीचर एजुकेशन रिसर्च, नई दिल्ली, वर्ष 4, अंक 2, पृ. सं. 66-761

7. चन्द्रवथन, एम. सुचित्रा ए. (2008), बी. एड. विद्यार्थियों मानवाधिकार शिक्षा की जागरुकता, रिसर्च हादसा तमिलनाडु, वर्ष 18, अंक 4, पृ. सं. 239-2451

8. चित्रा, जे. उमा (2007), शिक्षकों की पर्यावरण जागरुकता अध्ययन, एक्सपेरिमेंटस् इन एजुकेशन पब्लिश्ड वार्ड एस. आई. यू. कॉन्सिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, चितलापक्कम, चेन्नई, 35, अंक 11 पृ. सं. 223-226.

9. एन. सी. टी. ई.ए प्रोग्राम ऑफ एक्शन, मिनिस्ट्री ऑफ सुमन रिसोर्स डिवेलपमेन्ट, अगस्त, 19861

10. ऑरस, एन. (2011). दि परसेप्शन ऑफ टीचिंग एज ए बाई तुर्किश ट्रेनी टीचर्स: एटिट्यूड टूवार्ड बीन्ग अ टीक इन्टरनेशनल जनरल ऑफ हयुमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्स, 1140 83.871

11. मलिकी, एग्नेस. (2013). एटिट्यूड टूवार्ड दि टीचिंग प्रोफेशन ऑफ स्टूडेंट फ्रॉम दि फेकल्टी ऑफ एजुकेशन, नाइगर डेल्टा यूनिवर्सिटी, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ सोशल साइन्स रिसर्च, वर्ष 1, अंक 1. पृ. सं. 11.18।

12. त्रिवेदी, आर. पी. (2012). अ सटडी ऑफ एटिट्यूड ऑफ टीचर्स टूवार्ड टीचिंग प्रोफेशन टीचिंग एट डिरेण्ट लेबल, इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लेनरी ई-जनरल वर्ष 1, अंक 5, पृ. सं. 24.30

13. www.shodhprakashan.com